* श्री गुरुशासनम: *

समय की पुकार

समाज सेवा

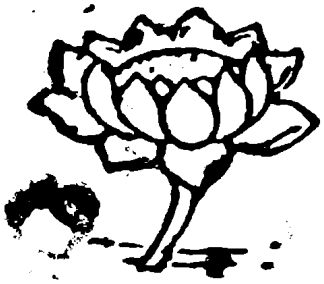

—सर्वाधिकार सुरक्षित—

लेखक व प्रकाशक

मथुरादत्त बेलवाल

दुदुली पो० ओ० बन्याड़

जिला नैनीताल उत्तर प्रदेश

पत्र व्यवहार का पता—

कुसुमखेड़ा, चिनपुर पो० ओ० हल्द्वानी

जिला नैनीताल

लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तकें—

कुमाऊंनी साहित्य सदन

चौरासी घण्टा बाजार सिताराम देहली ११०००६

से भी प्राप्त हो सकती हैं।

१००० प्रति १९८०

Rs 10-00

श्री गणेशाय नमः

समय की पुकार
समाज सेवा

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक व प्रकाशक

मथुरादत्त बेलवाल

सुपुत्र स्व० प्रेमबल्लभ बेलवाल

ग्राम—डुडुली पो० ओ० अध्याड़

जिला नैनीताल उ० प्र०

पत्र व्यवहार का पता—

मथुरादत्त बेलवाल

कुसमखेड़ा— चित्रपुर पो० ओ० हल्द्वानी (नैनीताल)

प्रथम संस्कार १०.० प्रति १९८०

10.00

विषय-सूची

नं०		पृष्ठ
१-	अन्डर टाइटल	१
२-	यह पुस्तक	३-४
३-	एक अच्छा प्रयत्न	४
४-	दहेज से परहेज करो	५
५-	शराब करती है सब खराब	६
६-	परिवार सीमित ही होना चाहिये	९
७-	कर्मयोगी महात्मा गांधी	११
८-	गांधो जी का प्यारा भजन	१८
९-	दहेज देना लेना कुरीती बताते हुये लड़को अपने मातृा पिता से कहती है कुमा० कविता	१९
१०-	छोटा परिवार घर की शान	२१
११-	संगठन से कठिनाईयां दूर होती हैं	२५
१२-	शिक्षा पाना महान चीज है (कुमा० कबिता)	२८
१३-	मँहगाई कुमाऊंनी कविता में	२९
१४-	बिकास की एक झलक	३१
१५-	उत्तराखण्ड पहाड़ा स्वर्ग बढ़बा	३२

पुस्तकें मिलने के मुख्य प्राप्ति स्थानें

१ कर्नाटक बुक डिपो सदर बाजार, हल्द्वानी

२ सन्तोष बुक डिपो सदर बाजार, हल्द्वानी

३ सरदार मनजीत सिंह पुस्तक विक्रेता, हल्द्वानी

४ चोपड़ा बुक स्टाल, आर्य समाज के सामने स्टेशन रोड, हल्द्वानी

** यह पुस्तक **

सज्जनो ! मैं अनपढ़ व्यक्ति हूँ । पाठशाला पढ़ने के नाम पर मैं विद्यालय के दरवाजे तक भी कभी नहीं गया । अच्छे लोगों की संगत करने और समाज के प्रति जागरूकता की अपनी प्रवृत्ति के कारण मैंने लोकगीतों के माध्यम से अपने समाज में अपना स्थान बनाने की ठानी और मैं उसमें सफल हुआ हूँ । यह मेरी तोरहवीं पुस्तक है । इसमें पूर्व प्रकाशित मेरे सभी संकलनों को पाठकों ने सराहा है और मुझे आशा है कि मेरे पाठक उस प्रकार प्रस्तुत संकलन को पढ़ेंगे पढ़ायेंगे, लोगों को समझायेंगे ।

समाज में आज जो बुराइयां फैल रही हैं उनके विरुद्ध वातावरण बनाना इस पुस्तक का ध्येय है । इसलिए मैंने पहले दो-चार शब्द भाषा में कहे हैं और पूज्य महात्मा गांधी का जीवन वृत्त देकर अपनी बातों को पुष्टी करने की चेष्टा की है तदुपरान्त टूटे-फूटे शब्दों में आज के समाज की आवश्यकताओं के लिये लोकगीत लिखे हैं । आशा है लोग इन्हें गाने के साथ ही अपने जीवन में इन आदर्शों को व्यवहार में भी लायेंगे ।

इस पुस्तक के आलेखन, मुद्रण, प्रूफरीडिंग प्रकाशन के लिये मैं सहयोगी प्रेस, हल्द्वानी के कर्मचारियों का आभारी हूँ जिन्होंने हमेशा की भांति इस बार भी अतुल सहयोग किया है । लीलाधर पांडे हरीनगर हल्द्वानी, सचिव सर्व सेवा संघ हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड की बौद्धिक

प्रतिभा श्री ललितकिशोर पांडे, पश्चिम बाटिका हल्द्वानी की विशेष कृपा पात्रता मुझे मिली है जिन्होंने मुझे सामग्री के शीर्षक प्रदान करने के साथ ही उपयुक्त निर्देशन भी किया है । पाठक वृन्द भविष्य के लिये अपने सुझाव देते रहें ।

विनीत:—

मथुरादत्त बेलवाल

—एक अच्छा प्रयत्न—

एक कहावत है कि विद्या से बुद्धि अधिक उत्तम होती है''. दरअसल मथुरादत्त के साथ यह बात शत प्रतिशत लागू होती है । अनपढ़ होने के बावजूद लोकगीतों की तीसरी पुस्तक का प्रकाशन निश्चित ही मथुरादत्त की अच्छी बुद्धि का ही द्योतक है। मैंने उनकी सभी पुस्तकें पढ़ी हैं उन्होंने हर अगली पुस्तक में भाषा-शैली को तो सुधारा ही है पर वर्तमान समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करने में भी अपने को ठीक स्थान पर रखा है ।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में लोक साहित्य का अपना अनूठा महत्व है क्योंकि लोक-साहित्य की पहुंच समाज की जड़ों में होती है । यहाँ लोग क्या करें व क्या न करें यह लोक साहित्य का प्रमुख विषय होना ही चाहिये और मथुरादत्त की यह पुस्तक वही काम कर रही है । महात्मा का कम शब्दों में अच्छा जीवन चरित्र निश्चित ही इतिहास के संतत्व को लोकसाहित्य द्वारा जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास की सराहना करनी ही पड़ेगी ।

सामाजिक बुराइयों को छोड़ो और नये प्रयास शुरु करो वाली मथुरादत्त की आवाज को कुमायूं के लोग समझ पायेंगे इसका मुझे विश्वास है । बस इतना ही कहना चाहता हूं कि यह एक अच्छा प्रयत्न है और मथुरदत्त इसके लिये साधुता के पात्र हैं ।

ललित किशोर पांडे

सचिव संसदीय बोर्ड, उत्तराखण्ड क्रांतिदल

हल्द्वानी (नैनीताल)

* श्री गणेशायनमः *

इस किताब में मैं कहना चाहता हूं कि :—

दहेज से परहेज करो

आचार्य चाणक्य ने कहा है "जिस प्रकार सोने को मल धोकर भी उठा लेते हैं उसी प्रकार योग्य कन्या को गरीब (और निम्न परिवार) से भी ग्रहण कर लेना चाहिये ।" आचार्य चाणक्य न केवल अर्थशास्त्र के रचियता थे बल्कि महापद्मनन्द नामक दुराचारी राजा को समाप्त करके उनके स्थान पर चन्द्रगुप्त मौर्य के सुदृढ़ शासन को संस्थापित करने वाले महान कूटनीतिज्ञ ब्राह्मण भी थे उनकी शिक्षा आज देश विदेशों में एक नीतिशास्त्र के रूप में पढ़ी जाती है । इसलिए हमको शादी ब्याह के समय भी उस महान पुरुष की शिक्षा का पालन करना चाहिये । दहेज की जब मांग की जाती है तो फिर अपनी कन्या के लिये भी उसकी व्यवस्था करनी पड़ती है भले ही सामर्थ हो या न हो । दहेज न दे पाने के कारण आज कई पढ़ी-लिखी योग्य तथा गृहकार्य और पारिवारिक जीवन में दक्ष कन्याओं का विवाह नहीं हो

पारहा है। जिसके कारण समाज मे व्यभिचार और वेश्यावृत्ति तथा अवैध सन्तानों को बढ़ावा मिल रहा है। कई अविवाहितों और नवविवाहितों के द्वारा दहेजकलह से परेशान होकर आत्महत्यायें की जारही हैं। कई उदाहरण शादी के बाद तलाक हो जाने के भी हैं। फिर इसके बाद पुलिस, अदालत, मुकदमा, सजा का दौरे चलता है जिससे परिवार टूटते हैं। इसलिये "दहेज" नामक इस सामाजिक अभिषाप को हमे छोड़ना चाहिये। मां-बाप युवक-युवतियों सभी को मिलकर दहेज न लेने-देने को स्वीकार करना चाहिए, शादी–विवाह से दो परिवारों के मध्य नये रिस्ते जुड़ते हैं इसलिये मित्रता पनपाने वाले इस कार्य में सौदेबाजी नहीं की जानी चाहिये। सुहाग गृहस्थी तथा कुलमर्यादा के विकास क्रम को ध्यान मे रखकर दहेज का बहिष्कार करना चाहिये ताकि नये जीवन का क्रम सुख-संतोष प्रेम के आदर्श बन्धन में बांधकर सबकी खुशियां ला सके। जो मां–बाप दहेज देना ही चाहें और दे सकने की स्थिति में हों तो उन्हें दहेज का पात्र 'वर' यानिकि गरीब पर योग्य व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए ताकि दहेज का सही उपयोग हो वह बैठक में सजाने या गोदाम में पड़े रहने मात्र के लिये न हो।

दहेज के बारे में दृष्टिकोण मानवता का होना चाहिए। गरीब व्यक्ति की कन्या के विवाह के समय सम्पन्न लोगों को अधिक अच्छे वस्तु भेट करनी चाहिये भले ही अच्छो आर्थिक स्थिति के व्यक्ति की कन्या के विवाह के समय कुछ भी न दो। दहेज मे अच्छी पुस्तकें दान में देना चाहिये। सम्पन्न घराने के व्यक्तियों को सोचना चाहिये कि एक दिन हाथ पसार कर जाना है—इस दुनियां की दौलत को यहीं छोड़ जाना है इसलिये बर (पुत्र) की कीमत नहीं माँगनी चाहिये। अपने अनमोल पुत्ररत्न के लिये गुदड़ियों से कोई मोती (निर्धन परिवार की योग्य कन्या) ढूंढ लानी चाहिये। भाषण और बयान देने वाले नेताओं का यह फर्ज है कि वे अपने परिवार से प्रारम्भ कर उदाहरण प्रस्तुत करें ताकि समाज के लिये कलंक दहेज प्रथा को मिटाया जा सके। यकीन कीजिये दहेज के साथ, सीता, सावित्री, लक्ष्मी और दुर्गा नहीं कैकयी और पूतना ही मिलेंगी तो आओ हम सब मिलकर "दहेज विरोध" का संकल्प करें।

(८)

शराब करती है सब कुछ खराब

शराब पीने वाले लोग आज साठ साल में पहुँचते पहुँचते काल के मुख में पहुँच जाते हैं । कभी हमारे देश के लोगों की आयु सैकड़ों वर्ष हुआ करती थी । शराब पीकर आदमी पिशाच बन जाता है । वह, अपने मां बाप बुजुर्गों का अपमान करने लगता है । पत्नी, बच्चों, भाई, बहनों के साथ मार पीट करने लगता है । पास-पड़ोसियों, दोस्त-मित्रों को गालियां देने लगता है । बदहवास होकर परायी बहू-बेटियों के साथ अश्लीलता करने लगता है । शराब के कारण दुर्घटनायें (एक्सीडेन्ट) भी प्रायः ही होते हैं । जिस धन को अपना जीवन स्तर सुधारने में, तीर्थ टन और दानपुण्य करने में खर्च करना चाहिये था उसे शराब पीने में लगाकर वह निरंतर गरीबी, बीमारी, नैतिक पतन की ओर बढ़ता है और अपना धन खर्च कर दूसरों द्वारा दुत्कारा जाता है । शराब पारिवारिक और सामाजिक शान्ति तो भंग करती ही है और साथ इसके कारण अपराध भी बढ़ते हैं । लोग पहले गांठ से पीते हैं फिर चल अचल सम्पत्ति बेचकर पीते हैं ।

फिर चोरी, लूट, आवारागर्दी अन्य रास्तों को अपनाते हैं और जीवन यापन की गारन्टी के अभाव में बच्चे भीखमंगे बन जाते हैं या फिर ऐसे ही अपराधी। जब कि शराब का कारोबार करने वाले लोग रोज मालोमाल हो जाते हैं। इसलिए शराब न पीयो न पिलाओ। सरकार को भी इस कारोबार को नही चलाना चाहिये। इस अनैतिक व्यापार को बन्द करना चाहिये। लोकतन्त्र में शराबी को वोट नही देना चाहिये। गांधीवादी संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों, पंचायतों और जागरुक नागरिकों तथा बुद्धिजीवियों पढ़ी-लिखी गृहणियों को इस बुराई को हटाने का आन्दोलन छेड़ना चाहिए। सभी धर्मों ने शराब को बुरा कहा है इसलिये हम अपने धर्म का पालन करना चाहिये। धर्म विरुद्ध आचरण करना पाप है।

परिवार सीमित ही होना चाहिये

कभी यह देश पूरी तरह सूनसान था। सभी संसार का यही हाल था। आज देश पूरी तरह आबाद हो गया है भूमि को बढ़ाया नहीं सकता और है उसे नदियां धता समुद्र कम ही करती रहती हैं। फिर आबादी बढ़ती रही तो एक दिन लोगों के लिये सिर छुपाने की जगह भी नहीं

रहेगी। भूमि-खेती करने को कम है, नौकरियां भी बेहताशा नहीं खोली जा सकती हैं। घर, दूकान, मिल फैक्ट्री बनाने के लिये बहुत धन और जगह चाहिये उन्हें भी सब लोग कायम नहीं कर सकते उसके लिये भी बुद्धि चाहिये। सोचिये यदि आपके पास अपनी आय के अनुपात में अधिक लोग खाने वाले होंगे तो क्या आप अपने बच्चों को सही शिक्षा पूरा कपड़ा, पेटभर भोजन और दवा दे सकेंगे उत्तर है नहीं। इसलिये सज्जनों परिवार को अन्धाधुन्ध मत बढ़ाओ—सयम से काम लो। सादा भोजन उच्च विचार, आचार व्यवहार में संयम, सयानी उम्र में शादी करने तथा आधुनिक उपायों का सीमित उपयोग करके हम अपने परिवार को सीमित रख सकते हैं। इससे आपके पीढ़ी की, आपके गाँव—देहात, राज्य और राष्ट्र की उन्नति होगी। आइये इन बुराइयों को दूर करने के लिये गांव—देहात से सगठित प्रयास करें। राजनीति और गुटवाजी से दूर एक सही मुहीम चलायें।

कर्मयोगी महात्मा गांधी

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि

२ अक्टूबर १८६९ को राजकोट के दीवान करमचन्द्र गाँधी के घर पैदा होने वाला बालक जिसका नाम मोहन दास रखा गया था इतिहास के पन्नों में महात्मा गांधी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजकोट से सामान्य विद्यार्थी के रूप में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद यह बालक उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैण्ड गया जहां उसने सादा जीवन बिताकर बैरिस्टर का अध्ययन किया। अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये शिक्षक द्वारा नकल का अवसर दिये जाने के बावजूद "चोरी न करने" के सिद्धान्त को पक्की तरह पालने वाले इस बालक ने इग्लैण्ड से बैरिस्टरी उत्तीर्ण की और भारत वापस लौटे तो "झूठ व फरेब का सहारा न लेने" को दृढ़ प्रतिज्ञ गांधी अपनी वकालत न चला पाये। यहां से दक्षिणी अफ्रीका चले गये और १८९३ के पश्चात बीस वर्ष तक वहां भारतीयों और काले लोगों के अधिकारों के लिये गोराशाही से जूझते रहे और आन्दोलन में सफलता प्राप्त कर १९१३ में भारत लौट आये। उसके पश्चात भारत की स्वतन्त्रता, सामाजिक बुराइयों, मानवीय एकता, सत्य अहिंसा - प्यार का बिगुल बजाते हुये ३० जनवरी १९४८ को एक धर्मान्ध की गोली का शिकार होकर "रामनाम" का उच्चारण करते हुये इस कर्मयोगी ने प्राण त्याग दिये। आइये उसके कुछ सिद्धान्तों का जीवन में पालन करें।—

मथुरादत्त वेलवाल

जब-जब भारत (पृथ्वी) में धर्म का पतन होता है तब-तब मैं धरा में जन्म लेता हूँ। १९वीं सदी में जब 'गोरे' लोग काले और रंगीन चमड़ी वाले लोगों को अपना गुलाम बना रहे थे और दुनियां मे अपने को सबसे शुद्ध बढ़िया, बुद्धिमान कौम बताकर शाकाहारी लोगों को चर्बी चढ़ी बन्दूकें चलाने को मजबूर कर रहे थे, ठण्डी आव-हवा के लोगों को गर्म प्रदेशों मे ले जाकर उनसे जानवरों जैसा काम लेते थे, ईसाई मिशनरियों द्वारा लालच देकर ईसाई बनाने के काम को सरकारी प्रोत्साहन दे रहे थे, दुनियां की दूसरी कौमों के लिये मनुष्यता के ढंग से जीने देने को दुष्वार बना रहे थे, जातियों, धर्मों, भाषाओं बोलियों को आपस में लड़वाकर अपना अधि-पत्य जमा रहे थे, फूट डालकर राज्य हड़पने की साजिशों मे लगे थे, ऐसे समय में पोरबन्दर (राजकोट) में एक महापुरुष का अवतार हुआ जिसको आज दुनिया महात्मा गांधी के नाम से जानती है।

वकालत उत्तीर्ण करने के बाद भारत से दक्षिणी अफ्रीका में प्रयास कर भारतीय व्यापारियों का पक्ष पोषण करते हुये जब उन्होंने वहां देखा कि "काले लोगों, रंगीन चमड़ी वाले लोगों और भारतीयों से अंग्रेज लोग अत्याचार करते हैं तो उन्होंने उसके

विरूद्ध जनता को संगठित किया और सत्याग्रह किया तथा विजय प्राप्त की। उसके पश्चात भारत लौटे तो बम्बई मे देशवासियों ने उन्हें "महात्मा" की संज्ञा दी। सरलता से कठिन जीवन जीने का अभ्यास करने वाले व्यक्तित्व के लिये महात्मा की यह उपाधि उचित ही थी।

उसके पश्चात महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम की स्थापना की। फिर चम्पारन (बिहार) के किसानो जो नील की खेती करते थे के शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई। ..र अहमदाबाद के मजदूरों के कष्टों के निवारण का काम हाथ में लिया और उसमें सफलता हासिल की। फिर खेड़ा किसान आन्दोलन चलाया और उसमें भी सफलता हासिल की। इस बीच ६ वर्षों में अपने हर काम में बिजय प्राप्त करने के पश्चात उत्साहित महात्मा गांधी ने १९२० मे कांग्रेस का नेतृत्व सम्भाला और १ करोड़ रुपया स्वराज्य फण्ड के लिये एकत्र किया। तब से अंग्रेजो द्वारा बनाये गये जन विरोधी नियमों को उन्होंने हमेशा तोड़ा जिसमें नमक कानून भी सरीक हैं। नमक बनाने में लगी पावन्दी के विरुद्ध उन्होंने ऐतिहासिक डांडी कूच आंन्दोलन किया था।

स्मरणीय है कि महात्मा गांधी जी की ही प्रेरणा से हमारे उत्तराखण्ड में टेहरी रियासत के अत्याचारों

के विरुद्ध शहीद देवसुमन ने आन्दोलन उठाकर पवित्र भागीरथी में अपने को अर्पण कर दिया था और बागेश्वर वागमती के तट पर बद्रोदत्त पांडे जी के नेतृत्व में कुली उतार का सफल आन्दोलन हुआ था । नैनीताल-ताकुला, ताड़ीखेत व कौसानी की यात्रा भी गांधी जी ने की थी। १९४२ में पूरा पहाड़ भी आन्दोलित हो गया था। सल्ट और सालम कुमायूं के वारडोली बने थे। गांधी जी की शिष्यता में पं० गोविन्द वल्लभ पन्त उत्तराखण्ड के एक सपूत के रूप में राष्ट्रीय नेता के रूप उभरे थे।

अहिंसा सत्य प्रेम के गांधी शस्त्र से सत्याग्रह आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। फलतः सारा देश महात्मा का अनुकरण करने लगा। अंग्रेजों ने उन्हें १९२२ में, १९३० में, १९४० में, १९४२ में, कई बार गिरफ्तार कर जेल भेज दिया लेकिन अंग्रेजों ने जितना दमन किया। आन्दोलन उतना ही वल पकड़ता गया। जव-जब गांधी गिरफ्तार हुये तब-तब लाखों लोगों ने अपनी गिरफ्तारी दी।

इस बीच महात्मा गांधी ने गरीबों की दुर्दशा देखकर स्वयं भी वस्त्र त्याग दिये इग्लैण्ड में महारानी एलिजावेथ से हुई गोलमेज कान्फ्रैन्स में भी उन्होने भारतीय धोती पहनकर ही भाग लिया था। उबले और

मशाले रहित सादे, पदार्थ भोजन में लेने लगे। महिलाओं और हरिजनों, पिछडे वर्गो, दलितों का उद्धार करने के लिये उन्होंने सर्वोदय का संचालन किया। हरिजन बस्तियों में निवास किया। उनके आश्रम में सभी को सभी काम जिसमेसफाई का काम भी सम्मिलित था करना पड़ता था। गांधी जी स्वयं भी सभी की भांति काम करते थे। चरखा चलाना सूत कातना कपड़ा बुनना उनका नित्य नियम था। उन्होंने शराब खोरी, विदेशी वस्तुओं, वेश्या-वृत्ति के विरुद्ध अभियं तथा पिकेटिंग (बहिष्कार) तथा खादी बुनने व पहनने का अभियान भी चलाया। वे नित्य प्रार्थना और योगाभ्यास भी करते थे। उन्होंने छूआछूत निवारण और हिन्दू-मुश्लिम एकता के लिये लम्बे-लम्बे उपवास भी किये और इस तरह सामाजिक पुनरुद्धार अभियान चलाकर उन्होंने लोगों को शिक्षा दी कि "पाप से घृणा करो पापी से नहीं। क्योंकि पाप छोड़ा जा सकता है ऐसा उनका विश्वास था। गांधी कर्म पर विश्वास रखते थे। हमेशा उन्होने जन्म के आधार पर ऊंच-नीच की मान्यता की निन्द्रा की। उनके आश्रम तथा सभाओं में सामुहिक प्रार्थनायें होती थी जिसमे सभी धर्मो के गीत गाये जाते थे। अपने सारे कार्य-क्रमों में समय की पावन्दी का वे सख्ती से पालन

करते थे । महात्मा गांधी हिन्सा में विश्वास नहीं करते थे इसलिये १९२० से १९४२ के मध्य जब-जब स्वाधीनता आन्दोलन से कहीं भी हिंसा हुई उन्होंने उसे स्थगित कर दिया । वे विश्व नागरिकता व विश्वबन्धुत्व के पोषक थे । महात्मा गांधी ने हिंसा और युद्ध को मिटाने हेतु शस्त्र निषेध की बात कही । उन्होंने बालविवाह तथा दहेज प्रथा के विरुद्ध जनजागरण करवाया और महिलाओं को भी बराबरी का स्थान दिलवाने के लिये यथाशक्ति प्रयत्न किया उनके इस कार्य मे उनकी पत्नी कस्तूरबा गाँधी ने उन्हें हमेशा सहायता की । अच्छी पीढ़ी का निर्माण करने के लिये माताओं की शिक्षा की वे हमेशा वकालत करते रहे और इसके लिये अपने आश्रम में उन्होंने व्यवस्था भी की थी । गांधी जी ने हरिजन व ग्राम स्वराज्य नामक पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुये इन तमाम मानव मूल्यों की रक्षा का चेतनापूर्ण कार्य भी किया । अन्तोगत्वा १९४२ में उन्होंने "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का नारा दिया और देशवासियों से "करो या मरो" का आवाहन किया । (दरअसल राष्ट्र प्रेम जो गांधीं के लिये परमेश्वर से प्रेम के समान था) इसके पश्चात महात्मा गांधी समेत लाखों लोग जेलों में ठूंस दिये गये लेकिन चार वर्षो तक सत्याग्रहियों द्वारा

झुकने से इन्कार करने पर अंग्रेजों ने भारत को स्वतन्त्र करना मंजूर कर १९४६ में संविधान सभा के लिये चुनाव कराये और १५ अगस्त १९४७ को यह देश आजाद हो गया लेकिन मुस्लिम नेताओं की हठ के कारण देश बट गया – खूनोखच्चर होने लगा। महात्मा गांधी ने पुनः उपवास किया और दंगा पीड़ित क्षेत्रों में शांति स्थापना में जुट गये उनके शान्ति स्थापना के प्रयास से नाखूश होकर नाथूराम गोड्से नामक एक धर्मान्ध युवक ने उनकी हत्या कर दी–काश गांधी कुछ वर्ष और जीवित रहते। हमारे देश की छटा ही कुछ और होती क्योंकि वह जो कुछ कहते थे पहले खुद करते थे। उनकी कहनी और करनी में अन्तर नहीं था। देश के सब लोग शिक्षित हों, सबको काम मिले इसके लिये उन्होंने एक हिन्दुस्तानी (देयनागरी) भाषा, बुनयादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा तथा कुटीर और लघू उद्योगों की स्थापना तथा खेती पर आधारित अर्थव्यवस्था पर जोर दिया था। वे पूरे देश में शराब बन्दी तथा गोहत्या निषेध को अनिवार्य समझते थे। सचमुच गांधी तहापुरुषों के अवतार थे – कर्मयोगी थे।

उस महान गांधी की शांति नीति को आज विश्व ने स्वीकार किया है। दिल्ली में बनी उनकी

समाधि "राजघाट" पर आज विश्व के नेता अपनी श्रद्धान्जलि समर्पित करते हैं तो आइये हम भी उनके कुछ अधूरे कामों को पूरा करने का बीड़ा उठायें । वे भारत को एक आत्मनिर्भर देश, शान्ति का वाहन देश मानवता का रक्षक देश बनाना चाहते थे । हमारी सरकार हमारी जनता को इसके लिये सतत प्रयत्नशील रहना होगा क्योंकि भारत और विश्व के समस्याओं का निदान सचमुच गाँधी ही हैं ।

* गांधी जी का प्यारा भजन *

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है ।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है ।

टुक नींद से अंखियां खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
यह प्रीत करन की रीती नहीं,
प्रभु जागत हैं तू सोवत है ।
जो कल करना सो आज करले,
जो आज करना है अब करले ।
उठ जाग मुसाफिर भोर भई.....

गीत कुमाऊंनी कविता

दहेज देना लेना कुरीती बताते हुये लड़की अपने माता पिता से कहती है।

सुणि लिया बोज्यु-म्यारा बयान,
बातों में म्यारा धारीया ध्यान ।
मेरी उमर – बेओड़ी अंगे,
तुमों कें मेरी फिकर हैगें ।
कुरीती छोड़ा जड़ बे मुल,
झन दीय दहेज झन करा भुल ।
दहेज दिवेर चेली बेचाला,
चेली कें तुमार दुःख है जाला ।
दहेज दगाड़ा चेलो जो दीनी,
उन चेलो कें दुखों है जाणि ।
नीको हो बर सजन घर;
शजन घर भौलों हो बेर ।
गरीब घर भौल बतौणि,
सुख शान्ति लैं गरीब खाणि ।
चेली दगाड़ा दहेज कनी,
पछीन चेली दुखों में रनी ।
ईजा पें बाज्यु सुणि लिया आबा,
कुरीती सब छोड़ा पें आब ।

समाज सेवा, ठुल छ काम,
कुप्रथा छोणन हमरो काम ।
दहेज जसि प्रथा पें आज ।
छोड़ी दिया सब दहेज बाज ।

कुरीती आज छोड़नी खासा,
दहेजा पार न लागौ आसा ।
चेली कौ दान-दान महान,
बर लै चैछ चेली समान ।

चेली जबाईक पिङ्गला हाथ,
सुणिलिया सब चेली की बात ।
कुप्रथा कुरीती छोड़ा पें सब,
समाज सेवा में लागी जाव अब ।

आब कानून है गछ जारी,
पिङ्गला हाथ दान छ भारी ।
बेद बतौछ ठुलो छ दान,
कन्या कौ दान-दान महान ।

बखत आज भाल अैगयो,
दहेज मागणि बिगाई गया ।
शयाणि है गै—चेली पें ज्वान,
गरीबी देखि भुरैछ ध्यान ।

आसु पोछेंछ नितर डाबी,
गोरी मुखड़ी हैजेछ काबी ।
होस्यार चेली जाणेछ सब,
गरीबी देखि चुपै रै तब ।
मानव ता छ सब है ठुली
रुपुली पछिन सब गै भुलीं ।
सुणि लिया ईजा- हाई राम-२
दहेज दीनाक झन लिया नाम ।
बखतं वि छ ठुली पुकार,
छोड़ा कुरीती—करो विचार ।
कास-कास केस है गया तब,
दहेज कमि पर बिगड़ सब ।
सेवा समाज काम छ ठुल,
अघील आब न करिया भुल ।
ये बात कणि येति छोड़नों
समाज सेवा मलै करोनों ।
सिखिल्या बुद्धि भौल पै ग्यान
कविता पार धरि ल्या ध्यान ।

गीत कुमाऊंनी कविता

बुद्धिवान लड़का अपने माता-पिता से निवेदन करता है आज समय की पुकार है कि कुरीती कुप्रथा को जड़ से फेंकना है . ईजा बोज्यु आप हमारी शादियों में दहेज का नाम भी मत लेना अब न तो दहेज लेना है और न दहेज देना समाज में ये बुराई सब से बड़ी है ।

ईजा व बाज्यू पुज्य छा तुम,
तुमरी सेवा करला हम ।
पित्तर भया तु[illegible] हमारा,
नान-तिन होया हम तुमारा ;
चार भै-बैणि हम छौ खास,
तुमों कैं इजा—हमरी आस ।
बखत आज कि आया यासा,
कुरीती चली दहेज जासा ।
मेरी उमर बेऊंणी अब,
तुमोकें मेरी फिकर तब ।
गरीब हो चेली होस्यारा ।
तब करली घरौ कौ कारा ।
तब तुमरी सेवा करैली,
दहेज लाली शान जमाली ।
भन लिया तुम दहेज नाम,
भली हो चेली भखौ हो काम ।

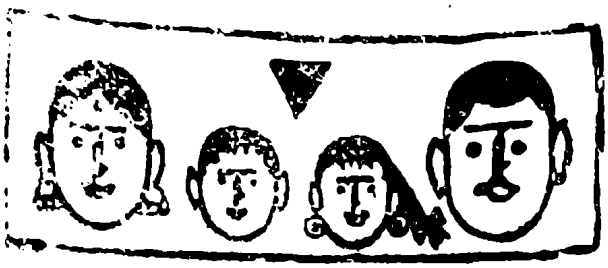

छोटा परिवार घर कि सान

परिवार नियोजन सफल राष्ट्र के लिये छोटा परिवार जरूरी है महिला व बच्चों के स्वास्थ में सुधार करने तथा पुरे राष्ट्र को अधिक शक्ति शाली व गतिशील बनाने के लिये बहुत आवश्यक है आज समय की पुकार है सब को छोटे परिवार रखने की जरुरत है और बच्चों को शिक्षित किया जाना चाहिये छोटे परिवार से होने वाले लाभ के बारे में बताया जाय तो परिवार नियोजन के लिये लोगों को तैयार करना कठिन कार्य नहीं है।

गीत कुमाऊनी कविता

छोटे परिवार घरै कि साना,
सुणि लिया सब धारी वै ध्यान ।
दु तीन नान तीन भाल घर हुणि;
सुख शान्ति में तो घर खाणि ।
सीमित होलौ घर परिवा,
खाण पिनै की भली बहारा ।
भाई व बैंति सुणि लिया खास,
नान परिवार ठुलो छ आस ।
लात कपड़ा मिलला भाला,
सुख सन्तोष मौज में रला ।
आज पुकार,
जुगै कि छ यौ छोट परिवार ।
मौज में रनी

छोटा परिवार घरै की शान,
झन भुला आब तोकेन निशान

घर भाला छोटा नान परिवार,
उच्ची शिक्षा को होलो प्रचार ।

लुप कांपर चलीया छन,
इनरो नाम भुलिया झन ।

परिवार कल्याल जाला पै जब,
महिला डाक्टर बताला सब,

कसिक होलो छोटा परिवार,
विधि बताला महिला डाक्टर ।

खुश हाल रनी नान परिवार,
साफ सुदर सब होस्यारा ।

ढकीण बिचोड़ भौलो मकाना,
कम परिवार ठूलो भै शान ।

ठूल कबीला फदीत घड़ी,
दिन लै रात वाँ रनी लड़ी ।

जन संख्या आज जोरों में बड़ी
अघीन देखा फदीत घड़ी ।

दस बार नान जै घर होया,
फदित हाल तै घर रया ।

—संगठन से कठिनाइयां दूर होती हैं।—

* *

आज समय की पुकार है देश की एकता व स्वतन्त्र की रक्षा तथा जननी जन्म भूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व निछावर करना हो आज सब से बड़ा धर्म है देश के प्रत्येक सदस्य की ऐसी भावना से प्रेरिता होकर देश सेवा का सकल्प लेना चाहिये सब से बड़ी बात है सभी नागरिक एक होकर भाई चारे के साथ एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये। संगठित होकर रहना आज की पहिली मांग है चाहे शहर हो या गांव कस्बा हो या जिला जो जहां पर रहें वहां पर मेल मिलाप से रहें एक दूसरे की मदद करें यही मानवता का बड़ा धर्म है।

अब कुमाऊंनी कविता

* *

संगठित होई बेर हुनी सब काम,
भाई चार मिली जुलीं ठुल छ पें नाम।

अंग्रेज भजाया यां बे मिली जुली बेर,
पैली कारौ संगठन पें गरजा शेर।

स्वतन्त्र भारत भयौ अंग्रेज भजाया,
भाजी बेर अंग्रेज गया एक लै नरया।

महांत्मा गांधी जी पें लोक मान तिलक,
मालवीय, नेहरू सब बिपन चन्द्र गंगाधर।

लाजपत राय, गोपाल, औ कृष्ण मदन मोहन,
गोविन्दबल्लभ मोतीलाल नेहरू ।
बल्लभ भाई पटेल लाल बहादुर शास्त्री,
चन्द्रशेखर आजाद सुभाष चन्द्र बोस ।

भगतसिंह, सरोजनी नायडू अब्दुल आजाद,
लाखों नेता और भया नेताओं का साथा ।
संगठित भया जब भारता का शेर,
अंग्रेज भाजी बै गया न लगाई देर ।

जन्म भूमि हमरी छ भारत विसाल,
शेर जास गरजनी भारता का लाल ।
राम कृष्ण की भूमि छ यो भारत महान,
वीर नेता पैद भई भारतै की शान ।

भ्यैर देश दुशमन तब त डरनी,
संगठन भारत में तन लै छ खनी ।
भारता का नौ जवानो सुणि लिया बात,
ये देश की सेवा कन तुमारा छ हात ।
मिलो जुली भाई चार बात छ पैं ठुली ।
सुणि बे समजी लिया भन जाया भुली ।

गोविन्दबल्लभ पन्त जी पै पहाड़ा का ताज
कविता में लेखि गयो सुणि लिया आज ।

महाँत्मा गांधी ज्युलै करछ विचार,
शान्ति-शान्ति भारत कौ हौलो पें उद्धार ।
लीडर शाती का बना गांधी महात्मा,
उनारा दगाड़ा सब नेता छमाछम ।
कविता पें लेखि गयौ संगठन ठुलौ,
मिली जुली रण चेंछ भन कारा भुल ।
घर घरों हुण चेछ संगठन सब,
संगठन जती हौलो खुश हाल तब ।
चाहे मोहल्ला सब चाहे हो ग्राम,
शहर हो कस्बा तब धारी लिया ध्यान ।
घर परिवार हो या पास लै पड़ोस,
संगठित रन भौल घारी बटो होसा ।
एकैलै पे दूसरौ की मदद करनी,
मानव धर्म तब तई थें त कनी ।
गरीबों की सेवा करा भौल करा कोम,
भाला काम जैलै करा अमर छ नाम ।
शान्ति में सन्तोष तब बतौगि पै सब,
ये कविता येती कै मै छोड़ो दीनो अब ।

शिक्षा पाना महान चीज है
कुमाऊंनी कबिता

लेखन पढ़न सिखौ भौलौ सिखौ ग्यान,
शिक्षा को प्रचार कारा धारी बटी ध्यान ।
स्कूलै की शिक्षा आज जरूरै सिखावा,
दया करो नाना कणि स्कूल पढ़ावा ।
अनपढ़ मानव की नाथी पें सम्मान,
सुणि लिया भाई बन्दो धरी दिया ध्यान ।
भली बात लेखी जानो [illegible]या पें ध्यान,
अनपढ़ मनुसिया पशुका समान ।
नान कणि पढ़ावा पें ग्यान लिखौ सब
जुगै की पुकार छ यौ सुणि लिया तब ।
पढ़ै लिखै नाना कणि खेती लै सिखावा,
नौकरी भरोसा पार क्वेलै क नीरावा ।
नौकरीं छ खेती ताला खेती लै व्यापार,
खेती जब भली होई पै देखो बहार ।
होस्यार पें नाना होला खेती में छ सान,
दुनियां में के नाथी पै खेती का समान ।
जीमिदारी कार भारी समभण चेंछ,
मेंहनतै की कमाई में बरकत रेंछ ।
शास्त्री ज्यू चलाई गई भुमी को सुधार,
जैल खेती भली करी ईनाम हजार ।

महंगाई

कुमाऊंनी कविता

महंगाई लें करौ कमाल,
कसिक कटला अघिन साल ।
काला बाजारी तेल लै पीगै,
गुड़ पैं चीनी तौ सब खैगै ।
गुप्त स्टाक देश में भारी,
जोरों में आज चोर बाजारी ।
बड़ी गै महंगाई हैरौ कमालो,
आवश्यक चिजों कौ हैगा अकालो ।
कैकी हुनैलो यतरी चाल,
बिलक वालाल उड़ाछ माल ।
पिसि चावल खाद्यान सब
आकाश छुंगौ तौ लै पैं तब ।
तब महंगाई हैगैछ खुब,
येल धारछ बिराट रूप ।
लात कपाड़ा सब अकरौ,
कसिक रला गरीब घर ।
धन धरती भाल खजाना,
थोड़ा लोगों का हाथ में जमान ।

आपणि – आपणि हैरैछ सब,
पछिन रैगै गरीब आब ।
नहो नहो न समजा खेला;
कोपी गै होला मिट्टी को तेला ।
बोतल सिसि कटरौल जाणि,
खाली बोतल घर लौटणि ।
तेलो को तब त्वौप हिराण,
जन्तालै आब कां होयो जाण ।
पेंली है आजा दिन छैं भाला,
भुपतीयों की यो ठुलो चाला ।
आजा विकासा अधीन बड़ो,
बाजार भौ पें असमान चड़ो ।
धन दौलत खाद्यान सब,
जाम कर दिनो घनपती तब ।
जुगै को छ यो ठुली पुकार,
मन में तब करा बिचार ।
समाज सेबा, सेवा छ ठुली,
ईन बातों कें, भन जाया भुली ।
कविता मेंलै ये दी छोड़ी,
कविता तुम लिया पें पढ़ो ।

विकाश की एक झलक

गीत कुमाऊनी कविता

ओ दादा ओ भुला ओ तारा,
यौ बिकास कसिकै आयौ ऊंचा पहाड़ ।
कैलै येकें जन्म देछ कैल करौ प्रचार,
ओ द[illegible]ओ भुला ओ तारा ।
कैल करौ प्रचा ओ तार २—
गांधी ज्युलै जन्म दियो नेहरू प्रचार ।
पन्थ ज्यु लै यौ बिकास भेजछ पहाड़ा ।
ओ ददा ओ भुला ओ तारा
पन्थ ज्यु लै यौ बिकास भेजछ पहाड़—२
गौ-गौ में स्कूल खोला प्राइमरी पाठशाला
नौला डिग्गौ धारा बणा पाणि की बहार ।
ओ ददा ओ भुला ओ तारा,
पाणि कि बहार हैरै ओ तारा २
बाटों में खड़न्ज डाला सुबिधा अपार ।
सड़कों को सुधार भयौ हिटण की बहार
ओ ददा ओ भुला व तारा,
हिटण की बहारा ओ तारा—२

उत्तराखण्ड पहाड़ा स्वर्ग बढ़ावा

* *

उत्ताखण्ड पहाड़ा स्वर्ग बढ़ावा , २
मेल मिलापल पहाडों में रवा । २
मिली जुलीं बेर बनों कै बचावा । २
बनों को कटान-कटाना रोकावा, २
पहाड़ों की गरीबो गरीबी हटावा २
फल फूलों की ढ़ावी बगीचा लगावा २
उत्ताखण्ड पहाड़ा स्वर्ग [illegible]ावा—२
नान तीना कें सब स्कूल पढावा २
स्कूल की शिक्षा जरूरी सिखावा २
गों का सभापति होस्यार बड़ावा २
अपणि मांगो कै अघीन बड़ावा २
जंगलों कटान- कटान बचावा २
जंगलों लीबेर पहाड़ों की काया २
खेती पाती को काम अघीन बढावा २
उत्तराखण्ड पहाडा स्वर्ग बढ़ावा २
आपण पहाडा अघीन बड़ावा २
राष्ट्रीय बचत—बचत बचावा २
पोस्ट आफिस डाकघर धारी आया
मेल मिलापले पहाड़ों मै रवा ।

— लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तकें —

नाम पुस्तक	मूल्य रु० पैसा
१—विजय भारत	०-२५
२—पर्वतीय लोक गीतों की झलक	०-६०
३—पर्वतीय लोकगीत	०-६०
४—कुमाऊँनी रसीले गीत	०-६०
५—बाला गोरिया व गंगानाथ जी का गीत	१-५०
६— कुमाऊं के लोक प्रिय गीत	१-००
७— संतोषी माँ का वर्णन	०-६०
८— कुमाऊँनी विवाह गीत	१-००
९— बाला गोरिया याने ग्वेल देवता	२-००
१०— रंग रंगीले कुमांऊ के लोक गीत	१-५०
११— गंगानाथ देवता का वर्णन	१-००
१२— पहाड़ी लोक गीतों का संग्रह कुमाँऊनी	२-००
१३—समय की पुकार, समाज सेवा	१-००

पुस्तक मिलने का पता --

चोपड़ा बुक स्टाल, आर्य समाज

के सामने स्टेशन रोड. हल्द्वानी (नैनीताल)

सहयोगी प्रिन्टर्स , नवाबी रोड, हल्द्वानी